BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

बिहुला विषहरी लोक कला : एक सांस्कृतिक विरासत

आनंद विजय (शोधार्थी)
शोध निर्देशन
डॉ. लवी सक्सेना
विश्वविद्यालय : विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश ।
पंजीयन संख्या : 23VU4939

सारांश

भारतीय लोकसंस्कृति में लोककलाएँ केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक और धार्मिक आस्थाओं की जीवंत अभिव्यक्ति हैं। ऐसी ही एक समृद्ध परंपरा बिहार के प्राचीन अंग क्षेत्र (मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया , बांका) की बिहुला विषहरी लोक कला है जो बिहार के साथ साथ झारखंड तथा बंगाल के कुछ क्षेत्रों में भी देखने के लिए मिलती है । ये लोक कला अंग प्रदेश में विशेष रूप से लोकप्रिय है। यह कला लोकगाथा, संगीत, नृत्य और नाट्य का अद्भुत समावेश है , बिहुला विषहरी लोक परंपरा नारी की अटूट निष्ठा और भक्ति का प्रतीक है, और इसकी प्रस्तुति का हर पक्ष अपने में अनूठा और अपनी एक कहानी बयान करती है और इसे लोकमानस में जीवंत बनाएं रखती है। जो मनसा देवी (विषहरी) और बिहुला-लखंदर की कथा पर आधारित होती है। इसकी विशेषता यह है कि यह केवल एक लोकनाट्य तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके हर स्वरूप – लोक नाटक, लोक चित्रकला, लोक कथा, और लोक गीत – इन क्षेत्रों में देखने-सुनने को मिलते हैं।

इस शोध में शोधार्थी ने बिहुला विषहरी लोक कला के लोक नाटक, लोक चित्रकला, लोक मूर्ति कला तथा लोक गाथा के बदलते स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

कुंजी शब्द : बिहुला विषहरी, अंग क्षेत्र, लोक कला

परिचय

भारतीय लोक परंपरा में लोकनाट्य एक अत्यंत समृद्ध और जीवंत विधा है, जो जनमानस की आस्था, संस्कृति, सामाजिक जीवन एवं धार्मिक विश्वासों का प्रतिनिधित्व करती है। बिहार की लोक सांस्कृतिक धरोहर में "बिहुला विषहरी" लोकनाटक एक विशिष्ट स्थान रखता है। यह लोकनाट्य विशेष रूप से अंग प्रदेश (वर्तमान भागलपुर और उसके आसपास के क्षेत्र) में प्रचलित है और नाग देवी मनसा विषहरी तथा बिहुला की कथा पर आधारित है।

"बिहुला विषहरी" नाटक धार्मिक, सामाजिक और पारिवारिक मूल्यों को एक साथ समेटे हुए होता है, जिसमें लोकगीत, संवाद, गायन, अभिनय और वाद्य संगीत का समन्वय इसे अत्यंत प्रभावशाली बनाता है। यह लोक कला केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह समाज में आस्था, स्त्री-शक्ति, भक्ति तथा जीवन के संघर्षों की प्रतीक बनकर उभरती है। इस नाटक की विशेषता इसकी संगीतमयता में निहित है। गायन शैली, पारंपरिक वाद्ययंत्रों का प्रयोग, और गीतों में निहित भाव—इन सबके माध्यम से यह नाटक दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है तथा हर बिहुला विषहरी की हर लोक कला का अपना एक महत्व है, इस शोध के माध्यम से शोधकर्ता बिहुला विषहरी लोक के के अंतर्गत, लोक नाटक, लोक चित्रकला, लोक मूर्ति कला, लोक गाथा के महत्व तथा वर्तमान स्थिति का अवलोकन किया है ।

"बिहुला बिषहरी" कहानी का सार

@2025 Bihar Shodh Samaagam

"बिहुला बिषहरी" पूर्वी भारत, विशेषकर बंगाल, बिहार और असम क्षेत्र की एक प्रसिद्ध लोककथा है, जो नारी की अटूट श्रद्धा, प्रेम और साहस की कहानी है। इस कथा का केंद्र है बिहुला, जो अपने मृत पति को पुनर्जीवित करवाने के लिए देवी मनसा (बिषहरी) से संघर्ष करती है। यह लोककथा न सिर्फ धार्मिक आस्था, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को भी दर्शाती है।

मुख्य पात्र:

बिहुला – एक सुंदर, धर्मपरायण और दृढ़ निश्चयी स्त्री

लखिंदर – बिहुला का पति, चांद सॉदागर का बेटा

चांद सॉदागर – एक अमीर और शिव-भक्त व्यापारी, जो मनसा देवी को नहीं मानता

मनसा देवी (बिषहरी) – नागों की देवी, जो अपने सम्मान और पूजा के लिए संघर्ष करती हैं।

कहानी :

मनसा देवी चाहती थीं कि चांद सॉदागर उनकी पूजा करें और उन्हें देवी के रूप में स्वीकारें। लेकिन चांद सॉदागर केवल भगवान शिव के उपासक थे और मनसा को वनदेवी मानते हुए पूजा करने से इनकार कर देते हैं। इससे क्रोधित होकर मनसा देवी चांद सॉदागर के बेटों को एक-एक करके मार देती हैं।

जब चांद सॉदागर के सभी बेटे मर जाते हैं, तब एकमात्र बचा पुत्र लखिंदर होता है। उसकी शादी बिहुला से की जाती है। चांद सॉदागर मनसा के क्रोध से डरते हुए शादी के बाद लखिंदर के कमरे में लोहे का मकान बनवाते हैं, ताकि कोई साँप भीतर न आ सके। मनसा देवी फिर भी अपने षड्यंत्र से एक साँप को उस लोहे के घर में प्रवेश करवा देती हैं, और लखिंदर को डसकर मार डालती हैं। इस घटना से पूरे नगर में शोक फैल जाता है।

बिहुला अपने पति के शव को एक नाव में रखकर देवताओं के लोक की यात्रा पर निकलती है। यह यात्रा अत्यंत कठिन होती है – बारिश, तूफ़ान, भूख, थकान – लेकिन बिहुला डिगती नहीं। वह अपने पतिव्रत धर्म और प्रेम में अडिग रहती है।

देवताओं के लोक में जाकर बिहुला ने देवताओं और मनसा देवी को प्रसन्न करने के लिए गीत, नृत्य और पूजा की। उसकी सच्ची श्रद्धा और तपस्या देखकर देवता और मनसा देवी पिघल जाते हैं।

मनसा देवी, बिहुला की भक्ति और प्रेम से प्रभावित होकर, लखिंदर को पुनर्जीवित कर देती हैं। चांद सॉदागर भी अंततः मनसा की शक्ति को स्वीकार करते हैं और उन्हें देवी के रूप में पूजा देना स्वीकार करते हैं।

लोक कला के प्रकार:

"बिहुला बिषहरी" लोक कला बिहार के अंग क्षेत्र (विशेषकर मुंगेर, भागलपुर, पूर्णिया, बांका) की सांस्कृतिक परंपरा में गहराई से रची-बसी है। यह कला विभिन्न लोक कलाओं के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है, जो क्षेत्रीय सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती है। इसके लोक कला के स्वरूप के रूप में बिहुला बिषहरी लोक नाटक, बिहुला बिषहरी लोक चित्रकला (मंजूषा), बिहुला बिषहरी मूर्ति कला, बिहुला बिषहर लोक गाथा, बिषहरी लोक गीत, बिहुला बिषहरी लोक कथा जैसे लोक कला का रोचक मिश्रण देखने के लिए अंग क्षेत्र में मिलता है।

बिहुला बिषहरी लोक नाटक : "बिहुला बिषहरी" लोकनाटक की समकालीन स्थिति और प्रदर्शन परंपरा से जुड़ा है।

यह लोकनाटक आज भी बिहार के भागलपुर, मुंगेर, बांका और पूर्णिया जिलों में उत्साहपूर्वक प्रस्तुत किया जाता है। गाँवों के मेले, देवी पूजन स्थलों, और सांस्कृतिक समारोहों में इसका मंचन किया जाता है।

कलाकारों की भागीदारी: पारंपरिक लोक कलाकारों के साथ-साथ अब प्रशिक्षित नाट्यकर्मी भी इस नाटक का मंचन करने लगे हैं।
नाटक मंडलियाँ, थिएटर ग्रुप और स्वतंत्र रंगकर्मी इसकी शास्त्रीयता और लोक स्वरूप को मिलाकर मंचन करते हैं। इससे नाटक की पहुँच ग्रामीण से शहरी दर्शकों तक हुई है।
अगस्त माह में, विशेषकर नाग पंचमी और मनसा पूजा के समय, लोक कलाकार अधिक सक्रिय रहते हैं। इस दौरान यह लोकनाटक धार्मिक अनुष्ठानों का अभिन्न हिस्सा बन जाता है।
कुछ जगहों पर इस कथा को डिजिटल थिएटर, लाइट एंड साउंड शो, के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। लोकल कलाकारों के साथ रंगमंचीय प्रयोग इसकी लोकप्रियता बढ़ा रहे हैं।
"बिहुला बिषहरी" नाटक आज भी अपनी लोकजड़ता और सांस्कृतिक प्रासंगिकता को बनाए रखते हुए विकसित हो रहा है। अगस्त में इसकी धार्मिक महता इसे अधिक सजीव बना देती है, जहाँ लोक श्रद्धा और रंगमंचीय कला एक साथ अभिव्यक्त होती है।
"बिहुला बिषहरी" लोक चित्रकला : "बिहुला बिषहरी" लोक चित्रकला, मंजूषा कला के नाम से भी जानी जाती है और इसकी उत्पत्ति का कोई प्रामाणिक लिखित विवरण देखने के लिए नहीं मिलता है पर इसका सबसे प्रारंभिक और प्राचीन प्रमाण "बिहुला बिषहरी" लोक गाथा में सुनने के लिए मिलता है और इससे ये भी तर्क सामने आते है कि उस समय भाव को लिख कर व्यक्त करना समाज के बीच नहीं आया था, पर भावचित्रत्रातमक लिपि के रूप में मंजूषा कला अपनी यात्रा तय कर रही थी।
लोक गाथा में इसका वर्णन मिलता हैं कि बाला लखनेन्द्र के मृत शरीर को बिहुला, भगवान विश्वकर्मा द्वारा निर्मित लोहे से बने नाव से स्वर्ग की यात्रा पे निकलती है। नाव में मंजूषा का प्रयोग नाव को दिशा देने के लिए प्रयोग किया गया था, जिसमें चार दरवाज़े थे, और नाव को जिस ओर मोड़ना होता था उस तरफ के मंजूषा के दरवाजे को खोल दिया जाता था ।
मंजूषा की चर्चा राजा बलि की कहानी में भी देखने के लिए मिलती हैं। जब राजा बलि जंगल शांति के लिए गए होते है तो दृढ़घट्मा ऋषि मूर्क्षित अवस्था में नाव के साथ गंगा नदी के किनारे मिलते है और उस नाव पे भी मंजूषा स्थापित थी और बाद में इस हस्तांतरित करने के लिए मंजूषा कला का रूप दिया गया।
वर्तमान में भी नागपंचमी के दिन अंग क्षेत्र की माता बहने, दीवार पे सर्प का चित्र गोबर के प्रयोग से बनाती है और उसके चारों ओर चकोर (चतुर्भुज) के अंदर अलग – अलग आकृतियां बनती हैं| मंजूषा चित्रकला को बनाने के लिए प्रकृति में विद्यमान फल, फूल, पत्ते, कंद–मूल, सब्जियों, मिट्टी का प्रयोग रंग के रूप में किया जाता था ।
मंजूषा कला में चित्रों के माध्यम से पूरी कहानी सुनाई जाती है, जैसे – **बिहुला की यात्रा, साँप का डसना, देवी मनसा का क्रोध**, आदि। यह कला एक प्रकार की **श्रृंखलाबद्ध चित्रकथा** होती है, जिसे देखकर लोग पूरी गाथा समझ सकते हैं।
इस कला में चित्र बायें से शुरू होकर दाहिनी ओर जाता है, फिर दाहिने से बायें की ओर जाता है। चित्र एक चश्मी यदा कदा दो चश्मी होते हैं, पुरुष पत्रों की अपेक्षा नारी पत्रों की गर्दन पतली होती है आंखे बड़ी एवं धनुषाकार होती है । इस कला में कान एवं भौंह का लोप होता है। पैर में जूते खड़ाव दर्शाया, पुरूष पत्रों को दर्शाने के लिए शीश पर पगड़ी या शिखा और मूंछ दर्शाया जाता है पुरूष पात्रों को धोती, कड़ा, कुंडल, मालाएं उपवस्त्र एवं आभूषणों से सजाया जाता है जबकि नारी पात्रों के सिर पर पल्लू के साथ आँचल लटकाया जाता है नारी पात्रों को घाघरा, कुन्चुकि, आँचल, नथ, छाती पर फूल के चित्र कुंडल, मांगटीका, चूड़ियां, बाजूबंद, कमरबंद, कर्णफूल इत्यादि विभिन्न आभूषणों से अलंकृत किया जाता है।

इस कला में नाग अलंकरण की प्रधानता रहती है जैसे देवी विषहरी के पांचों स्वरूप देवी जया को दर्शाने के लिए दाहिने हाँथ में तीर–धनुष, बायें में नाग, दोतीला भवानी को दर्शाने के लिए दाहिने हाँथ में चमकता हुआ मणि एवं बायें में नाग, पद्मा कुमारी को दर्शाने के लिए दाहिने हाँथ में कमल के फूल बायें में नाग, देवी आदिकसुमिन को दर्शाने के लिए दाहिने हाँथ में अमृत कलश बायें में नाग और देवी मैना विषहरी को दर्शाने के लिए दाहिने हाँथ पर बैठी हुई मैना या पक्षी और बाएं हाँथ में नाग का चित्र एवं देवी मनसा के पांचों स्वरूप के मस्तक पर नाग चित्र या नागमुकुट वाहन के रूप में नाग, नागरथ, नागसिंघासन कमलफूल पर विराजमान भी बनाया जाता है।

चंद्रधर सौदागर को दर्शाने के लिए पगड़ी पर आधा चाँद, मूछ एवं दाहिने हाँथ में मुंड धारी दण्ड का चित्र। चूंकि मंजूषा चित्रकला भावचित्रतात्मक कला है इसलिए चितेरे पत्रों को सहपात्रों या उसके प्रतीक चिन्हों या दृश्य के माध्यम से दर्शाते हैं।

मंजूषा कला में कथागत पात्र जैसे:- पांचों बहन विषहरी, भोलेनाथ महादेव, देवी पार्वती, सोनादह सरोवर, चम्पानगर, चंदो सौदगर, सोनिका सहुनी, लक्षमेंद्र के छवों भाई एवं भाभी,धन्ना-मन्ना मंत्री, लौहगृह, विश्वकर्मा, धन्वन्तरी बैध, नागमनियार, गोकुल गंगा घाट, सोनामुखी जहाज, देव करतार, गंगा माता, इंद्र,बाला लक्षमेंद्र के खेल खिलौने, वाद्ययंत्र, हांथी हथसार, घोड़ा घोड़सार, हनुमानजी, शीतला माता, वासुदेव सौदागर, मनको सहुनी, बिहुला, शंखा सौदागर, हंसा एवं वंशा और तीनों भाभियां का चित्र उज्जैनी नगर का चित्र बनाया जाता है।

रंगों का विशेष प्रयोग: 'गुपनिहां' में 5 रंग का मतलब छिपा हुआ है

गु:-गुलाबी

प:-पिला

नि:-नीला

ह:-हरा

न:-नारंगी

त्रिगुनियाँ अर्थात त्रिगुण **:** तमोगुण, रजोगुण, सतोगुण

तमोगुण:- पिला,

रजोगुण:- लाल या गुलाबी

सतोगुण:- नीला

मंजूषा चित्रकला में पांच प्रकार के बॉर्डर बनाया जाता है |

जो इसकी विशेषता में चार चांद लगा देती है।

(1)लहेरिया मंजूषा

(2)बेलपत्री,

(3)कोनिया(त्रिभुज),

(4) मोखा,

(5) सर्प की लड़ी

ये कलाकार इसे अपने परिवारों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिखाते रहे हैं।

त्योहारों, विशेषकर नाग पंचमी और विषहरी पूजा के अवसर पर ये चित्र बनाए जाते हैं और घरों में सजाए जाते हैं।

आधुनिक प्रयोग और बाज़ारिकरण : मंजूषा कला अब केवल कागज़ या दीवारों तक सीमित नहीं रही है। इसे अब नए उत्पादों और डिज़ाइनों पर चित्रित किया जा रहा है, जैसे: टी-शर्ट, चाबी के छल्ले (Key Rings), कॉफी मग्स, कर्टन/पर्दे, गिफ्ट आइटम्स, कैलेंडर और स्टेशनरी आइटम्स|

हालांकि ये प्रयास अभी प्रारंभिक स्तर (Primary Stage) पर हैं, लेकिन इससे कलाकारों को रोज़गार मिलने के अवसर बढ़े हैं और नई पीढ़ी भी इस लोककला की ओर आकर्षित हो रही है।

बिहुला–विषहरी लोक मूर्ति कला : बिहुला–विषहरी कथा केवल श्रव्य और दृश्य माध्यमों तक सीमित नहीं है, बल्कि मूर्ति कला के माध्यम से भी जनमानस में गहरी जड़ें जमाए हुए है। यह लोक मूर्ति परंपरा बिहार की प्राचीन धार्मिक आस्था, सामाजिक एकजुटता और कलात्मक संवेदनशीलता का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है।

प्रमुख मूर्तियाँ और उनका सांस्कृतिक अर्थ

पूजा के समय निर्मित मूर्तियाँ मात्र धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि लोक कथा के सांस्कृतिक पात्रों का मूर्तिमान रूप हैं:

विषहरी देवी की पाँच बहनें — रोग निवारण और स्वास्थ्य रक्षा की देवी के रूप में।

बिहुला — पतिव्रता और स्त्री शक्ति का मूर्त आदर्श।

लखिन्दर (बाला) — मानव जीवन के नश्वर सत्य का प्रतीक।

शिवजी — परम आध्यात्मिक सत्ता के रूप में।

चंद सौदागर — व्यापार, धर्म और सामाजिक दायित्व के प्रतिनिधि।

धोबिन और टुंडी — समाज के निम्नवर्गीय सहयोगियों की महत्ता को दर्शाते हैं।

इन मूर्तियों के माध्यम से न केवल देवी पूजा होती है, बल्कि लोक जीवन के विविध आयामों — प्रेम, संघर्ष, विश्वास और सामाजिक सामंजस्य — का भी चित्रण होता है।

समकालीन प्रासंगिकता : आज भी बिहार के कई ग्रामीण अंचलों में, विशेषतः पूर्णिया, में शादी–विवाह के अवसर पर बिहुला–विषहरी कथा का नाट्य मंचन किया जाता है, जिसमें इन मूर्तियों का विशेष स्थान होता है। कलाकार और ग्रामीण मिलकर रस्मों के साथ *पूरे सांस्कृतिक आयोजन* को जीवंत बनाते हैं। यह परंपरा लोककला की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण का अद्वितीय उदाहरण है।

बिहुला–विषहरी लोकगाथा : बिहुला–विषहरी लोक यात्रा में लोकगाथा का महत्वपूर्ण योगदान हैं, लोकगाथा ही वो माध्यम रहा जिसके द्वारा ये लोककला , लोक नाटक, लोक गीत, लोक चित्रकला, लोक मूर्तिकला का रूप में वर्तमान में जानी जा रही है । बिहुला–विषहरी लोक कला अगर अंग क्षेत्र की संस्कृति की जड़ है, तो बिहुला–विषहरी लोक गाथा को उस संस्कृती का तना कहा जा सकता हैं तथा बिहुला–विषहरी लोक नाटक, बिहुला–विषहरी लोक चित्रकला, बिहुला–विषहरी लोक गीत, बिहुला–विषहरी लोक मूर्तिकला, को टहनी कहना गलत नहीं होगा। बिहुला–विषहरी लोक गाथा, कंठ से कंठ प्रेषित होती चली आ रही है पर अब इसका दस्तावेजीकरण भी होना शुरू हो गया हैं। अंग क्षेत्र में कई लोक गाथाएं विद्यमान है पर बिहुला–विषहरी लोक गाथा का स्थान सबसे ऊपर है।

बिहुला–विषहरी की लोकगाथा, जो कभी सहजता, लोकभाषा और पारंपरिक धुनों में अपनी आत्मा बसाए हुए थी, आज सांगीतिक प्रदूषण और व्यावसायिक आकर्षण का शिकार हो रही है। इस परिवर्तन ने लोकगाथा के मौलिक स्वरूप को गहरा आघात पहुँचाया है।

मौलिकता का लोप : प्राचीन स्वरूप में लोकगाथाएँ एक विशेष धीमी लय, संवेदनशीलता और मिट्टी की सोंधी सुगंध से भरी होती थीं।

गायन में स्थानीय वाद्ययंत्रों — ढोलक, मंजीरा, झाल, हारमोनियम — का उपयोग होता था। कथा में भाव प्रवाह (रागात्मकता) अत्यंत स्वाभाविक होता था, जिससे सुनने वालों के हृदय तक कथा उतरती थी।

आज के समय में : पारंपरिक लय को छोड़कर, गायक तेज–तर्रार धुनों पर प्रस्तुति देने लगे हैं। भाव की गंभीरता की जगह संगीत की ऊँची गति और चमकदार प्रस्तुतियाँ आ गई हैं।

फिल्मी धुनों का प्रवेश : अब अनेक लोकगायक प्रसिद्ध फिल्मी गीतों की धुनों पर बिहुला–विषहरी गीतों को गा रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, लोकप्रिय हिंदी फिल्मों के रोमांटिक गीतों की धुन को लोकगाथाओं के साथ जोड़ा जा रहा है। इससे कथा का गंभीर भावक्षय (emotional dilution) हो रहा है, और श्रोताओं के बीच मूल कथा का प्रभाव कम हो रहा है।

साहित्यिक समीक्षा

01. डॉ. अमरेंद्र की पुस्तक : "अंग लोक संस्कृति और मंजूषा कला"

"अंग लोक संस्कृति और मंजूषा कला" डॉ. अमरेंद्र द्वारा रचित एक विशिष्ट शोध–ग्रंथ है, जो बिहार के अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को समग्रता से प्रस्तुत करता है। यह पुस्तक केवल एक लोककला विशेष का विवरण नहीं देती, बल्कि अंग प्रदेश की समृद्ध लोकजीवन, परंपरा, आस्था और कला–संवेदना का भी गहन चित्रण करती है।

02. डॉ. दशरथ ओझा की पुस्तक "हिंदी नाटक का उद्भव और विकास"

डॉ. दशरथ ओझा द्वारा लिखित "हिंदी नाटक का उद्भव और विकास" हिंदी नाट्य साहित्य के इतिहास और विकासक्रम को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। यह पुस्तक हिंदी नाटक के प्राचीन जड़ों से लेकर आधुनिक प्रयोगशीलता तक की समग्र यात्रा को गहनता से प्रस्तुत करती है। पुस्तक को ऐतिहासिक कालखंडों में विभाजित किया गया है —

जैसे प्राचीन भारतीय नाट्य परंपरा (भरत के नाट्यशास्त्र से लेकर संस्कृत नाटकों तक), हिंदी नाटक का प्रारंभिक चरण (भक्तिकाल और रीतिकाल), भारतीय नवजागरण के समय का नाट्य विकास और आधुनिक हिंदी नाटक।

लेखक ने भारतीय नाट्यशास्त्र, लोक नाट्य परंपराएँ (जैसे — नौटंकी, स्वांग, रामलीला आदि) तथा पश्चिमी रंग परंपरा (यूनानी नाटक, शेक्सपियर इत्यादि) के प्रभावों को भी हिंदी नाटक के विकास में जोड़कर देखा है।

पुस्तक में प्रमुख नाटककारों (भारतेंदु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, लक्ष्मीनारायण मिश्र, मोहन राकेश आदि) और उनके योगदानों का विश्लेषण किया गया है।

03. "मंशा महात्म्य" आलोक कुमार

आलोक कुमार द्वारा रचित "मंशा महात्म्य" एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जो लोक आस्था, सांस्कृतिक पहचान और धार्मिक विश्वास को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

यह रचना विशेष रूप से मंशा देवी और लोक संस्कृति में उनके स्थान को उजागर करती है।

"मंशा महात्म्य" में मंशा देवी के गौरवपूर्ण चरित्र, उनकी उपासना परंपरा और लोक–विश्वास को साहित्यिक स्वरूप दिया गया है।

ग्रंथ में पौराणिक कथा, लोकगाथा, और आधुनिक दृष्टिकोण का सुंदर समन्वय है।

बिहुला–विषहरी जैसी लोककथाओं का भी आधारभूत संदर्भ मिलता है।

धर्म और लोकजीवन का ताना–बाना:

यहाँ धार्मिक विश्वासों के साथ-साथ लोकाचार, परंपराएं, और सामाजिक संदर्भ भी जुड़े हुए हैं।

विशेषकर पूर्वी भारत (बिहार, बंगाल, असम) के लोक–जीवन की झलकियाँ मिलती हैं।

04. Angika.com (अंग क्षेत्र से जुड़ी सभी कला पर प्रकाश)

Angika.com वेबसाइट अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर और कला के विविध रूपों पर विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। वेबसाइट अंग क्षेत्र की लोक कला, शिल्प, संगीत, नृत्य, और चित्रकला जैसे विभिन्न कलाओं को संरक्षित और प्रचारित करने का सराहनीय प्रयास करती है। इसमें अंग के समर्पित कला रूपों, उनकी परंपरा और उनके समाज में महत्व को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित किया गया है। यह वेबसाइट अंग क्षेत्र के सांस्कृतिक इतिहास को जीवंत बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम है।

05. दैनिक भास्कर (2020) – "अंग क्षेत्र में समुद्र मंथन पर प्रकाश"

दैनिक भास्कर अख़बार में 2020 में प्रकाशित यह लेख अंग प्रदेश (वर्तमान भागलपुर, मुंगेर, बांका आदि क्षेत्र) में समुद्र मंथन कथा के सांस्कृतिक प्रभाव और उसकी लोकस्मृति में उपस्थिति को उजागर करता है।

यह लेख अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक गहराइयों में जाकर मिथकीय चेतना और लोक–आस्था के जुड़ाव को स्पष्ट करता है।

लेख में यह बताया गया है कि अंग क्षेत्र की कई लोक कथाओं, लोक अनुष्ठानों और सांस्कृतिक प्रतीकों में समुद्र मंथन से जुड़े प्रसंग अब भी जीवित हैं।

समुद्र मंथन के प्रतीक रूप में संघर्ष और संसाधनों के वितरण का भाव आज भी अंग संस्कृति में गहरे स्तर पर व्याप्त है।

यह भी प्रकाश डाला गया कि अमृत पाने की लालसा, विषपान जैसी घटनाएँ अंग क्षेत्र के लोक–व्यवहार, आस्था और उत्सवों में किस तरह परिलक्षित होती हैं।

06. "फेमिनिज्म इन इंडिया" पेज – बिहुला-विषहरी के माध्यम से नारी सशक्तिकरण

"Feminism in India" जैसे प्लेटफॉर्म पर यह स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है कि बिहुला–विषहरी कथा केवल एक धार्मिक या लोक–गाथा नहीं है, बल्कि एक गहरी नारी सशक्तिकरण की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति भी है।

बिहुला का संघर्ष, साहस, और दृढ़ता भारतीय लोक–संस्कृति में नारी शक्ति की उज्ज्वल मिसाल बनती है।

नारी की अदम्य इच्छाशक्ति:

बिहुला अपने मृत पति को जीवित करने के लिए कठिनाइयों का सामना करती है। उसकी धैर्य, संकल्पशक्ति, और आस्था उसे विजय दिलाती है।

यह भारतीय स्त्री की संघर्षशील छवि को दर्शाता है, जो सामाजिक एवं दैवी बाधाओं से हार नहीं मानती।

पुरुष–प्रधान समाज की चुनौती:

उस समय का समाज पुरुष–प्रधान था, फिर भी बिहुला जैसी महिला अपने अधिकार (पति का पुनर्जीवन) के लिए ईश्वर और समाज दोनों से संघर्ष करती है।

यह दर्शाता है कि स्त्री भी निर्णायक भूमिका निभाने में सक्षम है।

सांस्कृतिक परंपरा में स्त्री–केन्द्रित कथा:

अधिकांश पौराणिक या धार्मिक कथाओं में पुरुष नायक होते हैं, परंतु बिहुला–विषहरी गाथा एक स्त्री नायिका को केंद्र में रखती है।

यहाँ महिला मात्र सहायक नहीं, बल्कि कथा की प्रमुख संचालक शक्ति है।

स्त्री का देवी–रूप और मानवीय रूप का सामंजस्य:

बिहुला और विषहरी दोनों ही स्त्रियाँ हैं — एक देवी और एक साधारण महिला।

दोनों की कथा स्त्री को ईश्वरीय शक्तियों तथा सामाजिक संघर्षकर्ता दोनों भूमिकाओं में प्रस्तुत करती है।

आधुनिक नारीवादी विमर्श में प्रासंगिकता:

आज के नारीवादी सिद्धांतों — स्वतंत्रता, संघर्ष, समानता, अधिकार प्राप्ति — के बीज बिहुला की इस कथा में निहित हैं। इसलिए "Feminism in India" जैसे प्लेटफॉर्म इस लोकगाथा को भारतीय नारी सशक्तिकरण का आदिकालीन उदाहरण मानते हैं।

07. Helo@manjushakala.com (बिहुला विषहरी और मंजूषा कला पर प्रकाश)

यह वेबसाइट बिहुला विषहरी की लोकगाथा और मंजूषा कला की समृद्ध परंपरा पर केंद्रित है। इसमें बिहुला विषहरी कथा का संक्षिप्त और आकर्षक विवरण दिया गया है, जिसमें लोक आस्था, सांस्कृतिक परंपरा और महिला शक्ति के भावपूर्ण पहलुओं को दर्शाया गया है। साथ ही, मंजूषा कला के ऐतिहासिक विकास, पारंपरिक शैली और चित्रकारी के माध्यम से इस विरासत को संरक्षित करने के प्रयासों को भी प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। वेबसाइट का स्वरुप सरल, जानकारीपूर्ण और लोक संस्कृति के प्रेमियों के लिए बेहद उपयोगी है।

08. Zeenews.india.com (बिहुला कथा तथा कलश यात्रा पर प्रकाश)

Zeenews.india.com वेबसाइट पर बिहुला कथा को मिथिला और अंग प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान के रूप में प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस कथा के माध्यम से नारी संघर्ष, भक्ति, और धैर्य के पहलुओं को उभारा गया है। साथ ही, वेबसाइट पर कलश यात्रा के पारंपरिक महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है, जो सामूहिक श्रद्धा, लोक एकता और धार्मिक आस्था का प्रतीक मानी जाती है।

लेखन शैली सरल, भावपूर्ण और पाठकों को विषय से जोड़ने वाली है। वेबसाइट ने साहित्यिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पक्षों का अच्छा संतुलन बनाए रखा है।

09. Utsav.gov.in (बिहुला लोक पर्व पर प्रकाश)

Utsav.gov.in वेबसाइट पर बिहुला लोक पर्व को अंग क्षेत्र की जीवंत सांस्कृतिक परंपरा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें बिहुला विषहरी कथा से जुड़े लोक आस्था, पारिवारिक समर्पण और धार्मिक अनुष्ठानों का सुंदर वर्णन किया गया है। वेबसाइट ने लोक पर्व के सामाजिक महत्व, धार्मिक विश्वास और सामूहिक लोक चेतना पर विशेष प्रकाश डाला है। भाषा सरल, तथ्यपूर्ण और लोक परंपराओं के संरक्षण को प्रोत्साहित करने वाली है।

10. Prabhatkhabar.com पर आनंद शेखर द्वारा लिखे (बिहुला कथा, इसका महत्व और लोक पर्व से जुड़ी जानकारी)

आनंद शेखर द्वारा Prabhatkhabar.com पर लिखा गया लेख बिहुला कथा की सांस्कृतिक और धार्मिक गहराई को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है। लेख में बिहुला के संघर्ष, नारी शक्ति और भक्ति भावना को मार्मिक ढंग से उकेरा गया है। साथ ही, लोक पर्व के रूप में बिहुला विषहरी पूजा की परंपराओं, कलश यात्रा और सामूहिक लोक आस्था के महत्व को भी विस्तार से समझाया गया है। लेखन शैली सरल, भावनापूर्ण और पाठकों को लोक संस्कृति से जोड़ने वाली है।

11. Folkartopedia.com पर मंजूषा आर्ट की जानकारी ,साहित्यिक दृष्टि से

Folkartopedia.com पर मंजूषा कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, धार्मिक महत्व और चित्रण शैली को बारीकी से प्रस्तुत किया गया है। वेबसाइट ने मंजूषा चित्रकला के मिथिला और अंग क्षेत्र से जुड़ाव, लोकगाथाओं, विशेषकर बिहुला विषहरी कथा के चित्रात्मक स्वरूप, और पारंपरिक प्रतीकों का सुंदर विश्लेषण किया है। लेखन शैली तथ्यपूर्ण, शोधपरक और लोक कलाओं के संरक्षण को प्रोत्साहित करने वाली है। यह प्रस्तुति मंजूषा कला को गहराई से समझने में पाठकों की मदद करती है।

12. Hindi.news18.com अंग क्षेत्र और बिहुला के जुड़ाव पर प्रकाश

प्रेम प्रभाकर द्वारा Hindi.news18.com पर लिखा गया लेख अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान और बिहुला कथा के गहरे संबंध को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। लेख में बताया गया है कि कैसे बिहुला कथा अंग प्रदेश की लोक आस्था, सामाजिक संरचना और धार्मिक परंपराओं का अभिन्न हिस्सा है। लेखन शैली सरल, भावनापूर्ण और लोक चेतना को उजागर करने वाली है। यह लेख अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक गरिमा को समझने में पाठकों की मदद करता है।

13. Livehindustan.com (2021 में बिहुला पूजन की जानकारी पर प्रकाश)

Livehindustan.com ने 2021 में प्रकाशित जानकारी में बिहुला पूजन को लोक आस्था और पारंपरिक श्रद्धा का उत्सवपूर्ण रूप बताया है। इसमें विषहरी पूजा, कलश यात्रा और सामूहिक लोक अनुष्ठानों का विस्तृत वर्णन किया गया है। लेख में विशेष रूप से कोरोना काल के बीच हुए आयोजनों में लोगों की आस्था और सांस्कृतिक जुड़ाव को सकारात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। भाषा सहज, सूचना-प्रधान और लोक संस्कृति के प्रति सम्मानभाव से भरी हुई है।

14. Kavitakosh.org (सम्पूर्ण बिहुला लोकगाथा पर प्रकाश)

Kavitakosh.org वेबसाइट पर सम्पूर्ण बिहुला लोकगाथा को भावनापूर्ण और पारंपरिक शैली में प्रस्तुत किया गया है। इसमें बिहुला के संघर्ष, प्रेम, भक्ति और विषहरी पूजा से जुड़े लोक विश्वासों का विस्तृत चित्रण मिलता है। लोकगाथा की भाषा सहज, काव्यात्मक और सांस्कृतिक भावनाओं से ओत-प्रोत है। वेबसाइट ने इस अमूल्य लोकधरोहर को संरक्षित करने और नई पीढ़ी तक पहुँचाने का सराहनीय प्रयास किया है।

शोध उद्देश्य

लोक कला के महत्व का अवलोकन

लोक कला / विद्या / परंपरा) में होने वाले परिवर्तन पर प्रकाश

शोध प्रश्न :

1. बिहुला-विषहरी लोक कला का धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व क्या है?
2. कैसे बिहुला-विषहरी मूर्तियों में अधिक तकनीक के प्रयोग की अनुमति है?
3. बिहुला-विषहरी पूजा में प्रयोग होने वाली मूर्तिकला तकनीकों में क्या परिवर्तन आए हैं और वे वर्तमान में किस प्रकार प्रचलित हैं?
4. बिहुला-विषहरी पूजा के आयोजन में क्षेत्रीय विविधताओं का क्या प्रभाव है?
5. युवा पीढ़ी में बिहुला-विषहरी परंपरा के प्रति रुचि और उसमें आने वाली समस्याएँ क्या हैं?
6. बिहुला-विषहरी मंजूषा कला का वर्तमान स्वरूप ही प्रारंभिक स्वरूप था?
7. बिहुला-विषहरी लोक कला के संरक्षण और विकास के लिए कौन सी रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं?

@2025 Bihar Shodh Samaagam

शोध पद्धति (Methodology) : इस शोध में खुला शोध (Open-ended Research) एवं गुणात्मक शोध (Qualitative Research) पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार की शोध पद्धति में पूर्वनिर्धारित उत्तरों के बजाय खुली बातचीत और अनुभवों पर आधारित सूचनाओं को एकत्र किया गया है।

बिहुला विषहरी कथा की सांस्कृतिक, धार्मिक, और सामाजिक व्याख्या के लिए गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया।

बिहुला–विषहरी लोक कला और पूजा से संबंधित प्राचीन ग्रंथों, लोककाव्य, और आधुनिक शोध पत्रों का अध्ययन।

क्षेत्रीय अध्ययन (Field Study) , बिहार के विभिन्न क्षेत्रों (जैसे भागलपुर, मुंगेर, पूर्णिया) में बिहुला–विषहरी पूजा के आयोजन का अवलोकन और समुदाय से साक्षात्कार। भागलपुर और मुंगेर जैसे प्रमुख स्थानों पर बिहुला–विषहरी पूजा के आयोजनों का उदाहरणात्मक विश्लेषण।

नमूना संग्रहण : शोधकर्ता ने भागलपुर के प्रशिक्षित नाट्य कर्मी के साक्षात्कार सर्वप्रथम डेटा का संग्रहण किया तथा श्रृंखला बद्ध तरीके से नमूनों को संग्रहित किया।

निष्कर्ष

बिहुला विषहरी लोक गाथा भारतीय लोक कला परंपरा का मूल आधार रही है। इसी से अन्य लोक कलाओं का जन्म हुआ और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण का माध्यम भी बनी। आज भी लोक कलाकार और प्रशिक्षित कलाकार मिलकर बिहुला विषहरी की कथा का मंचन कर रहे हैं, लेकिन आधुनिक समय में पाश्र्व ध्वनि और फिल्मी संगीत के बढ़ते प्रयोग ने इसकी मौलिकता को प्रभावित किया है। मंजूषा कला, जो कभी पूरे अंग क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान थी, अब केवल पारंपरिक पर्वों तक सीमित रह गई है। अंगवासियों में इस कला के प्रति रुचि की कमी स्पष्ट दिखाई देती है, जो चिंता का विषय है।

मूर्ति कला भी अब केवल लोक पर्वों तक सीमित हो गई है। मूर्ति बनाने वाले कलाकारों की संख्या घटती जा रही है। हाल के वर्षों में आधुनिक घटनाओं से जुड़े पात्रों की मूर्तियाँ भी बनाई जा रही हैं, जो दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बनती हैं, परंतु इनका स्थान पारंपरिक मूर्तियों से भिन्न होता है।

वर्तमान में बिहुला विषहरी गीतों को फिल्मी धुनों पर प्रस्तुत किया जाना पारंपरिक स्वरूप के क्षरण की ओर संकेत करता है। लोक कला की इस अमूल्य धरोहर की रक्षा हेतु लोगों में जागरूकता बढ़ाना और इसकी सांस्कृतिक महत्ता को समझाना अत्यंत आवश्यक है।

सुझाव

बिहुला विषहरी लोक गाथा, मंजूषा कला, मूर्ति कला आदि की पारंपरिक शैलियों, गीतों और विधाओं का लेखन और रिकॉर्डिंग के माध्यम से संरक्षण किया जाए। पुस्तकों, शोध प्रबंधों और डिजिटल आर्काइव्स में इन्हें सुरक्षित किया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इसका अध्ययन कर सकें।

अंग क्षेत्र में एक समर्पित 'लोक कला केंद्र' स्थापित किया जाए जहाँ पारंपरिक कलाकारों को मंच मिले, प्रदर्शनियाँ आयोजित हों, और नई पीढ़ी को प्रशिक्षण मिल सके। यह केंद्र अनुसंधान, प्रशिक्षण और प्रदर्शनी का भी कार्य करेगा।

क्षेत्रीय विश्वविद्यालयों में बिहुला विषहरी, मंजूषा, मूर्ति कला जैसी पारंपरिक कलाओं पर विशेष अध्ययन और शोध के लिए 'लोक कला विभाग' खोला जाए, जहाँ स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर पाठ्यक्रम संचालित किए जाएं।

उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में अंग क्षेत्र की लोक कलाओं को शामिल किया जाए, जिससे लोक विरासत को शैक्षणिक मान्यता मिले और युवा वर्ग इन कलाओं के प्रति गंभीरता से आकर्षित हो। स्कूलों, कॉलेजों और सामाजिक मंचों पर विशेष कार्यक्रम चलाए जाएं ताकि बच्चों और युवाओं को इन कलाओं के प्रति रुचि और सम्मान विकसित हो। सरकार और निजी संस्थाओं के

@2025 Bihar Shodh Samaagam

सहयोग से लोक कलाकारों को वित्तीय सहायता, पुरस्कार व प्रोत्साहन योजनाएं चलाई जाएं ताकि वे अपने कार्य में निरंतरता बनाए रखें

परिसीमन

बिहुला–विषहरी लोक कला का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है, तथा अंग प्रदेश (वर्तमान बिहार के कुछ जिले) में इसकी विशेष प्रतिष्ठा है। चूंकि संपूर्ण अंग क्षेत्र बहुत बड़ा है, अतः शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के लिए इस क्षेत्र के तीन प्रमुख स्थानों — भागलपुर, मुंगेर तथा पूर्णिया — का चयन किया है, इसके अतिरिक्त, बिहुला–विषहरी लोक कला के अंतर्गत अनेक विधाएँ आती हैं, शोधकर्ता ने निम्नलिखित चार मुख्य विधाओं को अध्ययन का आधार बनाया है:

बिहुला–विषहरी लोक नाटक, बिहुला–विषहरी लोक चित्रकला, बिहुला–विषहरी लोक मूर्तिकला , बिहुला–विषहरी लोक गाथा

परंतु शोध को लक्षित एवं गहन बनाने शोधकर्ता ने अन्य संबंधित कलाओं और विविधताओं को अध्ययन के परिधि से बाहर रखा है ताकि अनुसंधान केन्द्रित, गहन और उद्देश्यपूर्ण रहे।

संदर्भ सूची :-

Amrendra. The first season, samiksha prakashan, 2018/Amrendra, The first season, Samiksha Prakashan, 2012/

Anand A, https://feminisminindia.com/2022/07/15/how-do-folklore-inculcateprotests-a-case-study-of-angika-folk-culture/, Jul 2022, feminisminindia.com/

Bhaskar D,https://www.bhaskar.com/news/TRA-samudra-manthan-mandar-parvat-in-bihar-news-hindi5494126-PHO.htm/

Ojha D, Thefirst season, Rajpal Prakashan, 2012./ Kumar A, The first season, Hema devi Prakashan, 2021.

https://www.angika.com/p/history-of-ang-anga-angdesh.html?m=1

http://www.manjushakala.in/manjusha-art/story-of-bihula-bishari/

https://www.google.com/amp/s/zeenews.india.com/hindi/india/bihar-jharkhand/patna/know-the-full-story-of-bihula-vishhari-what-is-the-importance-of-bari-kalash/1307472/amp

https://utsav.gov.in/view-event/bihula-festival

https://www.google.com/amp/s/www.prabhatkhabar.com/state/bihar/bihula-vishari-puja-started-with-devotion-know-its-story-axs/amp

https://www.folkartopedia.com/oral-traditions/folklores/folklore-angika-bihula-bisahari-bhagalpur-sk/

https://www.google.com/amp/s/hindi.news18.com/amp/news/bihar/if-he-will-worship-you-then-you-will-get-fame-know-the-story-of-famous-bihula-vishhari-6950011.html

https://www.livehindustan.com/bihar/katihar/story-bihula-vishhari-puja-on-17th-devotees-engaged-in-preparation-4348272.html